THE RING: An Interdisciplinary International Journal
ISSN: 0035-5429 2083-3520 UGC CARE 1 Journal
Vol. 45 Issue 01, Dec 2023, Impact Factor: 9.985
https://mbsresearch.com/index.php/thering Email: mbsresearchp@gmail.com
Double-Blind, Peer Reviewed, Refereed& Open Access International Journal

हिंदुस्तानी भाास्त्रीय संगीत में गायन के परिर्वतित आयाम

डॉ0 अम्बिका कश्यप

असिसटेंट प्रोफेसर

गुरू नानक गर्ल्ज कॉलेज, यमुनानगर।

हिंदुस्तानी संगीत हमारे जीवन का सुंदर संश्लेषण है, भारतवर्ष की संस्कृति का परिचायक है और भारत की सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है। भारतीय साहित्य और भारतीय कला के समान भारतीय संगीत भी शताब्दियों की अमूल्य देन है। कला कोई भी हो यदि वह परंपरागत नहीं है तो वह अजायबघर की वस्तु ही कहलाएगी। संगीत के इतिहास में कला प्रस्तुत करने के लिए तत्संबंध नियमों का अनुसरण आवश्यक है। कला सौंदर्य उपासना का सजीव प्रतीक और उसका अमर माध्यम है। संगीत कला मुख्यतः प्रयोगात्मक कला है तथापि उसका शास्त्रीय पक्ष भी उपेक्षनीय नहीं। शास्त्र से अभिप्राय अध्धेय विषय की वैज्ञानिक व्यवस्था से है जिसके माध्यम से अनुशासन के साथ शिक्षा की सुविधा संपन्न हो सके। शास्त्र का कार्य निगमात्मक प्रणाली से सिद्धांतो की स्थापना कर कला को स्थायित्व तथा प्रतिष्ठा प्रदान करना है। लक्ष्य तथा लक्षण में सामंजस्य स्थापन शास्त्र का प्रधान उददेश्य है। शासन से अभिप्राय केवल नीरस एवं निष्प्राण नियमों के तार्किक प्रतिपादन मात्र से नहीं अपितु कला की चिरंतनता बढ़ाने वाले तत्व चिंतन से है। ''नादरूपो जनार्दन कला'' का बीज मंत्र कला की इसी प्रवाहिता को संयत रखने का कार्य शास्त्र का है। कला का वही प्रवाहित शास्त्र सम्मत हो सकता है जो कला के मौलिक सिद्धांतो के विपरीत ना होते हुए जन रूचि के अनुकूल हो।

यदि कला सौंदर्य उपासना का सजीव प्रतीक और उसका अमर माध्यम है तो इसमें कोई संदेह नहीं कि हिंदुस्तानी संगीत की प्राचीन कला जिसका जन्म वैदिक युग में हुआ था। यह आध्यात्मिक और रसात्मक भावनाओं से पूरी तरह संबंधित है। इसलिए जब उसके प्राचीन इतिहास का अध्ययन करते हैं तो यह आवश्यक हो जाता है कि उसके ऐतिहासिक वातावरण और उसकी ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों का भी कला के दृष्टिकोण से पूरा निरीक्षण अथवा अध्ययन करें। संगीत कला का प्रवाह सदैव दो धाराओं में प्रवाहित होता रहा है। मार्ग तथा देशी संगीत में प्रथम, शास्त्र के अनुबंध के द्वारा कला की परिष्कृता तथा अभीजातता पर ध्यान दिया जाता है। दूसरे में लोक अभिरुचि नियामक तत्व होता है तथा शास्त्र पक्ष गौण होता है। प्रथम के लिए विशिष्ट संस्कार एवं शिक्षा–दीक्षा की आवश्यकता होती है। दूसरी संपर्क तथा सहित संस्कारों से प्रसूत होकर सर्वजन बोध्य होती है। दोनों में कलाकार की सौंदर्य अनुभूति का विशिष्ट स्थान रहता है। केवल अंतर यह है कि मार्गी में वह नियमों की सीमा में अवध रहती है तथा देशी में उसकी अभिव्यक्ति अपेक्षाकृत स्वच्छंद रूप से होती है । साम तथा गंधर्व दोनों का मूलाधार लोक संगीत रहा है और इस दृष्टिकोण से दोनों मूलतः देसी संगीत का प्रतिनिधित्व करते हैं। सामवेद भारतीय संगीत कला का प्राचीनतम निदर्शन है। इसका स्त्रोत तत्कालीन लोक संगीत ही रहा तथापि यज्ञ आदि जैसे धार्मिक समारोह से तथा समाज के उच्च वर्ग से संबधित होने के कारण उसमें संस्कार तथा नियमबद्धता की मात्रा बढ़ गई और उसे शिष्ट सम्मत मार्ग संगीत का स्वरूप प्राप्त हुआ। किसी कला के गौरवशाली अतीत काल का केवल स्तुति गान करना ही काफी नहीं है, उसके गुणों और उसकी विशेषताओं का कलात्मक विश्लेषण करना भी परम आवश्यक है।

THE RING: An Interdisciplinary International Journal
ISSN: 0035-5429 2083-3520 UGC CARE 1 Journal
Vol. 45 Issue 01, Dec 2023, Impact Factor: 9.985
https://mbsresearch.com/index.php/thering Email: mbsresearchp@gmail.com
Double-Blind, Peer Reviewed, Refereed& Open Access International Journal

उसके व्यवहारिक पक्ष का सजीव ढांचा बगैर जाने हुए हमें उसकी प्रगतिशील शक्तियों का कोई भी ज्ञान नहीं हो सकता। किसी जीवत प्रगतिशील कला का अध्ययन करते समय उसकी परिवर्तन शीलता का भी पता चलता है।

भारतवर्ष में दो पद्धतियाँ हैं । जहां तक संगीत का संबंध है पहली पद्धति को हिंदुस्तानी संगीत के नाम से पुकारते हैं और दूसरी को कर्नाटक संगीत के नाम से। हिंदुस्तानी संगीत को कुछ लोग उत्तर भारत का संगीत भी कहते हैं। जैसे कर्नाटक संगीत दक्षिण भारत का संगीत कहलाता है। संगीत की इन दो अलग–अलग पद्धतियों का वर्णन करने से यह भ्रम नहीं होना चाहिए कि यह एक दूसरे के बिल्कुल विपरीत है । सांस्कृतिक रूप से यह दोनों सांगीतिक सांस्कृतिक आत्मा के दो अनिवार्य अंग हैं। कर्नाटक संगीत के बहुत से राग उतर भारतीय रागों से मिलते–जुलते हैं, कुछ के और दूसरे नाम है और वह उतर भारतीय रागों से बहुत कुछ अलग भी हैं। उत्तर भारतीय पद्धति स्वर लगाने का ढंग दूसरा है और दक्षिण भारतीय संगीत का दूसरा। उत्तर भारतीय तालें ज्यादा कठिन है अधिक विस्तार पूर्वक भी हैं मगर कर्नाटक संगीत से मिलती–जुलती भी हैं। उत्तर भारतीय रागों का भाव प्रदर्शन कर्नाटक संगीत से कहीं अधिक व्यापक है और यह अपने रागों का कर्नाटक संगीत से कहीं ज्यादा सूक्ष्म, भावुक और कलात्मक विश्लेषण भी करते हैं। कर्नाटक संगीत अन्य प्रभावों से इतना प्रभावित नहीं हुआ जितना उत्तर भारतीय हिंदुस्तानी संगीत। इसी कारण शायद कर्नाटक संगीत में एक प्रकार की सभ्य कट्टरता है और वह इतना रोचक, भावुक और परिवर्तनशील नहीं जितना हिंदुस्तानी संगीत । अब प्रश्न यहां यह आता है कि हिंदुस्तानी संगीत से हमारा क्या अभिप्राय है और उनकी व्यापक और विस्तृत परंपरा क्या है किस प्रकार उसके गायक, वादक और नृतक इस कई 100 वर्ष की महान परंपरा के अंतर्गत आते हैं। ऐसा करने से ही एक प्राचीन उन्नतिशील और परिवर्तनशील कला के असली इतिहास का पता चलता है।

सभी जानते हैं कि भारतीय संगीत का जन्म मंदिरों में हुआ और उसका पहला ऐतिहासिक और सैद्धांतिक संकेत हमें सामवेद से मिला। संगीत के प्राचीन नियमों और सिद्धांतों के अलावा उसकी क्रियाशीलता को भी जानना चाहिए। संगीत का व्यवहारिक रूप और उसके बारे में मुख्य जानकारियाँ वैदिक काल के पश्चात हिंदुस्तानी संगीत की उन्नति बराबर होती रही और संगीत आगे बढ़ते हुए नए से नए परिवर्तन को अपनाता रहा, परिवर्तनशीलता को स्वीकार करता रहा। वैदिक संगीत कुछ और था और उसके बाद का संगीत कुछ और । संगीत, कला की दृष्टि से बदलता ही रहा क्योंकि परिवर्तन उसके जीवन का सिद्धांत था। परिवर्तन उसी कला में होते हैं जिसमें जीवित रहने की शक्ति होती है। इसलिए हिंदुस्तानी संगीत को एक उन्नतिशील जीवित कला ही मांगते हैं उसकी आत्मा अमर है। परिवर्तन होते हुए भी संगीत की आत्मा के स्वभाव और चरित्र में और उसके सिद्धांतों में कोई अंतर नहीं आया क्योंकि संगीत एक जीवित और परिवर्तनशील कला है।

संगीत कला तथा शास्त्र का उद्भव स्वयंभू परमेश्वर से हुआ है। भारतीय परंपरा के अनुसार नटराज शिव, नृत्य कला के आदि स्त्रोत है तथा भगवती सरस्वती गीत तथा वादयकला की प्रवृत्तिका है। नाट्य शास्त्र के अनुसार गंधर्व के तत्वों को समाहित करने वाला नाटयवेद स्वयं ब्रह्मा की रचना है। नृत्यकला का तांडव तथा लास्य रूप भगवान शिव तथा पार्वती की देन माना जाता है। हमारे संगीत ने मंदिर में जन्म पाकर बाद में एक परिमार्जित कला का रूप धारण किया। यह सच है कि उसकी आत्मा में अपूर्व शांति थी परंतु उसके चरित्र में परिवर्तन शीलता भी मौजूद थी। उसकी अलौकिक प्रतिभा में प्रगति

THE RING: An Interdisciplinary International Journal
ISSN: 0035-5429 2083-3520 UGC CARE 1 Journal
Vol. 45 Issue 01, Dec 2023, Impact Factor: 9.985
https://mbsresearch.com/index.php/thering Email: mbsresearchp@gmail.com
Double-Blind, Peer Reviewed, Refereed& Open Access International Journal

शीलता का विशेष गुण था । ऐसा ना होता तो हमारे प्राचीन हिंदुस्तानी संगीत की इतनी उन्नति नहीं होती परिवर्तन के सिद्धांत को स्वीकार करके ही प्रत्येक कला उन्नति करती हसंगीत के शास्त्रीय पक्ष के साथ–साथ यदि हम उसके व्यवहारिक रूप को जाने तभी हम उसे समझ पाएंगे। जहां एक और संगीत के शास्त्र का ज्ञान होना अनिवार्य है वहीं दूसरी और एक श्रोता की हैसियत से एक संगीत प्रेमी में संगीत का आनंद लेने की सहृदयता और भावुकता भी होनी चाहिए। जब भी कोई कलाकार या संगीतज्ञ अपने संगीत में किसी भी प्रकार का संशोधन कर उसमें नवीनीकरण का प्रयास करता है तो सर्वप्रथम उसे उपेक्षा ही मिलती है किंतु धीरे–धीरे वह उस समाज में प्रचलित होने लगती है। शास्त्रीय संगीत नियमबद्धध है और प्राचीन सिद्धांतों पर अवलंबित है। कोई भी संगीतज्ञ क्यों ना हो वह संगीत के सिद्धांतों का परित्याग नहीं कर सकता। उन सिद्धांतों और नियमों की अवहेलना किए बिना ही वह नवीनीकरण की पद्धति को अपनाता है। प्राचीन संगीत के पुनीत विचारों के आगे सब अपना सिर झुकाते हैं। हिंदुस्तानी संगीत की सैद्धांतिक मर्यादा और उसकी नियमबद्धता दो अनिवार्य गुण हैं परंतु आश्चर्यजनक बात यह है कि इन नियमों से जकड़े हुए इस संगीत में गायक और वादक दोनों के लिए परिवर्तन की पूरी स्वतंत्रता है। अच्छे गायक वादक का यह गुण उसके संगीत की शोभा को और भी अधिक बढ़ा देता है। कलाकार पूरी तरह से स्वतंत्र रहता है कि और सुंदरता तथा गुणों से अपनी संगीत कला को श्रोतागणों के सामने प्रदर्शित कर सके।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात हिंदुस्तानी संगीत में जो सबसे बड़ा परिवर्तन आया, वह था माइक्रोफोन का आविष्कार। माइक्रोफोन के आविष्कार से गायक या वादक सूक्ष्म से सूक्ष्म ध्वनि को बहुत सहजता से अपने श्रोता गणों तक पहुंचा सकता था। उन दिनों संगीत राजा महाराजाओं के दरबार में गाने बजाने का प्रचलन था। जहां गायक राजा से बहुत दूर बैठकर अपनी बुलंद आवाज से गाने का प्रदर्शन करता था। जल या तालाब ही ध्वनि माध्यम होते थे । प्राचीन समय में ध्रुवपद का बहुत अधिक प्रचलन था। ध्रुवपद की चार बानियाँ अपनी चरम सीमा पर थी। अधिकतर ध्रुवपद संस्कृत में ही हुआ करते थे अकबर और तानसेन के युग के बाद ध्रुवपदों की रचना हिंदी या ब्रजभाषा में होने लगी । रचनाओं में कविता का बहुत चमत्कार होता था ध्रुवपद का अपना एक अलग स्वभाव चरित्र और वातावरण था। गंभीर शैली और उसके साथ वीणा की संगत। घ्रवुपद की कविता में सात्विकता थी। ईश्वरीय वंदना, स्तुति गान इनसे ही रचनाएं प्रेरित होती थी। संगीत अपने शुद्ध रूप में ईश्वरीय आराधना तथा साधना का एक मार्ग था। वह आत्मिक शांति का स्वरूप था। यह उस परम चित् आनंद स्वरूप के दर्शन कराने का मार्ग प्रशस्त करता था। यह वह संगीत था जिसमें गायक या वादक नाद ब्रह्म में लीन हो जाता था। संगीत में संयम, संतुलन था और शांति थी। वीणा में भी ध्रुवपद की भांति ही नियमों व सिद्धांतों का पालन करती थी। समय परिवर्तित हुआ जहां पहले ईश्वरीय वंदन के लिए संगीत गाया बजाया जाता था अब वही संगीत राजाओं को प्रसन्न करने के लिए, उनकी प्रशंसा में गाया बजाना लगा। उसमें से गंभीरता, ठहराव, संयम, संतुलन धीरे–धीरे सब को परे रखकर भक्ति के स्थान पर श्रृंगारिकता ,मनोहार तथा चंचलता को समाहित किया जाने लगा।

तानसेन जैसे महान गायक ने ध्रुवपद गायन को पराकाष्ठा तक पहुंचाया और उसकी रगों में नया रक्त प्रवाहित किया। ध्रुवपद गायन के उच्च शिखर पर विराजमान होने के दो ढाई सौ वर्षो बाद एक बड़ा क्रांतिकारी परिवर्तन संगीत के संसार में हुआ। वह था 18वीं शताब्दी में ख्याल की शैली का जन्म। इस परिवर्तन से ध्रुवपद शैली के शांत से वातावरण में हलचल सी मच गई। शांति और संतुलन के क्षेत्र में एक नई विलक्षण कल्पना का प्रवेश हुआ ।

THE RING: An Interdisciplinary International Journal
ISSN: 0035-5429 2083-3520 UGC CARE 1 Journal
Vol. 45 Issue 01, Dec 2023, Impact Factor: 9.985
https://mbsresearch.com/index.php/thering Email: mbsresearchp@gmail.com
Double-Blind, Peer Reviewed, Refereed& Open Access International Journal

ध्रुवपद ने राग संरचना को कठोर अनुशासन, स्वर–शुद्धता और ध्यानयोग जैसी विशेषताओं से परिभाषित किया। उन्नीसवीं शताब्दी से लेकर बीसवीं शताब्दी तक ख़्याल और ठुमरी जैसी शैलियों का उद्भव हुआ, जिसने रागों में भावनात्मक अभिव्यक्ति, लचीलापन और नवाचार की संभावनाएँ खोलीं। ख़्याल ने राग संरचना को कल्पनाशीलता और स्वच्छंदता का आयाम दिया, वहीं ठुमरी ने श्रृंगार और भावप्रवणता को संगीत के केंद्र में स्थापित किया। इस प्रकार संगीत अब केवल साधना और अनुशासन का माध्यम न रहकर विविध भावनाओं की सजीव अभिव्यक्ति का रूप लेने लगा।

जब भी किसी नई शैली का नवीनीकरण होता है, तो एक नया विवाद अवश्य सृजत हो जाता है । वैदिक ऋचांए, प्रबंध, ध्रुवपद ,ख्याल ,ठुमरी आदि। यदि प्राचीन ध्रुवपद में चार बानियां हो सकती थी और ध्रुवपद के घरानों का जन्म हो सकता था तो ख्याल जैसे क्रांतिकारी परिवर्तन का भी होना निश्चित था । प्रत्येक जीवित कला मे परिवर्तन होता है और वह परिवर्तनशील होती है। हिंदुस्तानी संगीत में ख्याल की शैली का प्रवेश कल्पना ही का प्रवेश था। ख्याल शब्द का अर्थ है 'कल्पना' जिसकी कोई सीमा ना हो और जो पूर्ण रूप से विलक्षण और स्वतंत्र हो। ध्रुवपद के कड़े अनुशासन का विरोध संगीत की कल्पना प्रसूत नई भावनाओं ने आरंभ कर दिया।

ख्याल की शैली में दिल को लुभाने वाला आकर्षण था और संगीत के विद्यार्थी, कलाकार उसकी तरफ झुक पड़े। स्वरों के नाजुक और भावपूर्ण बहलावें, शब्दों का मधुर और भावुक उच्चारण, शब्दों के साथ राग की बढ़त और स्वरों के साथ शब्दावली का विस्तार, छोटे – छोटे स्वरों के टुकड़े, बोलतान, तानें, मीड़, सूत, मुरकी, कण, स्वरों की मौलिक और भावुक व्याख्या, सम को सुंदरता और आसानी से दिखाना, स्थाई और अंतरे को संवारना और सजाना, स्वरों का आनंद लेना , कल्पना शक्ति की सहायता से राग के स्वरों की नई–नई व्याख्या करना और अपनी गायकी को रोचक भावपूर्ण, प्रभावशाली और वज़नदार बनाना। स्वयंभू परमेश्वर से आरंभ हुआ संगीत धीरे–धीरे परिवर्तित होता चला गया । मंदिरों में जो संगीत स्वांतः सुखाय के लिए गाया जाता था वह धीरे–धीरे थ्नेपवद या त्मउपग का स्थान लेने लगा।

थ्नेपवद ने संगीतकार को अलग स्वंतत्रता प्रदान की है । कलाकारों ने प्राचीन और वर्तमान को जोड़कर नया रुप प्रस्तुत किया लेकिन उस थ्नेपवद में ये घ्यान रखा गया कि प्राचीनता खण्डित न हो । राजाओं के प्रशस्ति गान बनते चले गए। ब्रिटिश काल में संगीत राजाओं और नवाबों के दरबारो से निकलकर संगीत वेश्याओं और कोठे पर पल्लवित होने लगा । भक्ति तथा वीर रस का स्थान लिया श्रृंगारिकता ने और श्रृंगारिकता का स्थान लिया सास ननद और पिया ने ।

जैसी– जैसी सामाजिक परिस्थितियां परिवर्तित होती गई संगीत उन्हें स्वीकार करता चला गया। जहां एक और माइक्रोफोन ने संगीत में एक नई क्रांति ला दी थी वहीं मीड़ युक्त गाने की जगह खड़े गाने का प्रचलन होने लगा। माइक्रोफोन सूक्ष्म से सूक्ष्म ध्वनि को श्रोताओं तक पहुंचा देता और यदि जरा सा भी उसमें बेसुरापन होगा तो श्रोताओं को एक दम से पता चल जाएगा । ठुमरी, धमार, होरी, सादरा ,तराना, लक्षण गीत सभी अपनें–अपनें रूप में परिवर्तनों को स्वीकार करते गए और नए रूप में सामने आतें चलें गए।

परिवर्तन में जहां पाश्चात्य संगीत का भी अपना पूरा प्रभाव हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत पर था, वहीं फिल्म संगीत ने भी अपनी पूरी भूमिका निभाई। पाश्चात्य संगीत से हमने हारमोनी और मेलडी जैसे

THE RING: An Interdisciplinary International Journal
ISSN: 0035-5429 2083-3520 UGC CARE 1 Journal
Vol. 45 Issue 01, Dec 2023, Impact Factor: 9.985
https://mbsresearch.com/index.php/thering Email: mbsresearchp@gmail.com
Double-Blind, Peer Reviewed, Refereed& Open Access International Journal

शब्द लेकर जोकि हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की ही देन थी उन्हें परिवर्तित रूप में प्रस्तुत किया । फिल्म संगीत सबके मन को एकदम से भा जाने वाला संगीत था । इसका प्रभाव भी शास्त्रीय संगीत पर आया।

अक्सर लोगों को यह कहते सुना है कि आज का युवा वर्ग है बहुत आगे है । आज आप 1 वर्ष के बच्चे के हाथ में मोबाइल पकड़ा दीजिए वह शांत हो जाएगा । टच स्क्रीन को वह बहुत आसानी से यूज़ करने लगता है। पहले वर्ग अपनें से दूसरी पीढ़ी को अधिक अग्रसर मानता है और दूसरी पीढ़ी अगली पीढ़ी के युवा वर्ग को अधिक अग्रसर मानतें हैं। उसका कारण यदि है तो वह केवल टेक्नोलॉजी है । आज से बहुत ज्यादा समय पूर्व की बात नहीं 25 से 30 वर्ष पूर्व यदि आपको किसी दिग्गज कलाकार का कोई पर्टिकुलर राग का रिकॉर्ड चाहिए तो आपको उसे ढूंढना अत्यंत कठिन हो जाता था, लेकिन आज आप राग का नाम लिखें, एक लंबी फेहरिस्त तैयार होकर आपके सामने चली आती है। बड़े गुलाम अली खाँ साहब, आमिर खाँ साहब, पंडित भीमसेन जोशी, पंडित हरिप्रसाद चौरसिया न जाने ऐसे अनेकों कितने नाम सिर्फ यू टयूब पर जाकर एक क्लिे की आवश्यकता है। संगीत जगत में एक क्रांति सी गई है इस नई एडवांस टेक्नोलॉजी से । आप एक राग सीखिए और यू टयूब पर अपना चैनल बनाकर अपना लिंक डाल दीजिए। अर्थात स्मंतदपदह उमजीवकवसवहल का स्वरूप भी बदल गया है।

संगीत गुरमुखी विद्या है गुरू के मुख से निकली हुई हर बात शिष्य के लिए शास्त्र सर्व सम्मत है। वर्षों तक गुरू के घर में रहकर गुरू की सेवा करना उनके साथ जागना ,उनके साथ समय व्यतीत करने का एक महत्वपूर्ण कार्य रहता था और साथ–साथ उनसे शिक्षा भी मिलती रहती थी लेकिन आज उसमें भी परिवर्तन है। ऑनलाइन क्लास का ज़माना है । आपको कहीं जाने की जरूरत नही बस अपने फोन का स्क्रीन ऑन कीजिए और उस पर अपने गुरू के दर्शन कर उनसे क्लास ग्रहण कर लिजिए। अगर आप चारों और दृष्टि घुमा कर देखें तो आप यह महसूस करंगे कि प्राचीन समय से लेकर अब शास्त्रीय संगीत का प्रचार और प्रसार अत्याधिक बढ़ चुका है। पंडित विष्णु नारायण भातखंडे तथा विष्णु दिगंबर जी जेसे क्रांतिकारी पुरूषों का समस्त समाज ऋणी है जिन्होंने उस समय में संगीत को सरक्षण एवं सुरक्षित करने का प्रयास किया जब संगीत और संगीतज्ञ दोनों को हीन दृष्टि से देखा जा रहा था। किंतु आज भारतवर्ष के हर महाविद्यालय में संगीत विषय के रूप में फल–फूल रहा है । संगोष्ठियों का आयोजन हो रहा है। चर्चाए, परिचर्चाये, संगीत सम्मेलन, महफिलें, बैठकों का आयोजन हो रहा है ।

इतना प्रचलन होने के बावजूद कहीं ना कहीं खोखला पन नजर आ रहा है। कहीं ना कहीं हम सब बेचैन है परेशान हैं। क्यों आज संगीत आत्मिक शांति या उच्च नाद ब्रह्म स्वरूप को नही दर्शाता रहा। शायद हमारा धैर्य कम पड़ गया है, समय परिवर्तित हो गया है हमारी च्तपवतपजपमे और बदल गई हैं। रियाज़ का स्थान डिग्रीयों ने ले लिया है। शिक्षा का स्थान सिलेबस ने ले लिया है। शिक्षक सिलेबस करवा रहा है और विद्यार्थी सिलेबस सीख रहा हे, क्योंकि आत्मिक शांति का वह संगीत आपका अत्यधिक समय मांगता है, संयम मांगता है, संतुलन मांगता है ,जो आज के परिवेश में दे पाना अत्यंत कठिन है। आज का विद्यार्थी शॉर्टकट को अपनाना चाहता है। जल्द से जल्द पंडित भीमसेन जोशी, बड़े गुलाम अली खां या आमिर खान जी के बराबर बैठना चाहते हैं। एक राग सीखने के बाद कुछ ही महीनों में उसे यह लगने लगता है कि अब दूसरा राग शुरू होना चाहिये। संगीत का प्रदर्शन अधिक

THE RING: An Interdisciplinary International Journal
ISSN: 0035-5429 2083-3520 UGC CARE 1 Journal
Vol. 45 Issue 01, Dec 2023, Impact Factor: 9.985
https://mbsresearch.com/index.php/thering Email: mbsresearchp@gmail.com
Double-Blind, Peer Reviewed, Refereed& Open Access International Journal

हो गया है और उसे आत्मसात कम किया जा रहा है। चमत्कारिकता ,दिखावा, एक के बाद एक तान, एक के बाद एक तोड़ा, तैयारी इसी उधेड़बुन में आज का संगीतज्ञ संगीत की उस पराकाष्ठा को खो रहा है। प्देजंहतंउए ल्वनज्नइमए थ्बम ठववा मंच प्रर्दशन का साधन बन गये हैं । मंच प्रदर्शन का पहरावा अत्यधिक सुशोभित है किंतु उसके अंदर एक असंतुष्ट खोखला पन समाता चला जा रहा है। पीढ़ी दर पीढ़ी गुरू से शिष्य को आने वाली परंपरा आगे तो बढ़ रही किंतु उसकी नींव कमजोर पड़ती जा रही है। ऐसे में आज के युवा वर्ग के लिए यह जरूरी है कि वह धैर्य से संयम से संगीत को अपने जीवन में उतारे एक मजबूत चरित्र का निर्माण करें अत्याधिक समय संगीत के प्रति समर्पित करें। अपेक्षाएं संगीत से कम हो और सेवा अधिक हो संगीत केवल जीविका उपानार्जन के लिए ना सीखे बल्कि स्वांतः सुखाय का भी ध्यान रखें तभी संगीत से साधना की ओर अग्रसर हो पाएँगे।

इक्कीसवीं सदी में संगीत ने राग संरचना ने और अधिक बहुआयामी स्वरूप ग्रहण किया है। डिजिटल तकनीक, रिकॉर्डिंग साधन, ऑनलाइन मंच और वैश्विक प्रस्तुति–शैलियों ने रागों को सीमाओं से परे पहुँचाकर उन्हें अंर्तराष्ट्रीय संवाद का माध्यम बना दिया है। अब संगीत केवल भारतीय परंपरा तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वैश्विक श्रोताओं के लिए भी सहज उपलब्ध हो गए हैं। इस शोध का निष्कर्ष यह है कि राग संरचना का इतिहास केवल संगीत का क्रमिक विकास नहीं है, बल्कि यह भारतीय सांस्कृतिक और सामाजिक इतिहास का जीवंत अभिलेख भी है। संगीत के माध्यम से भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना, भावनात्मक संवेदनाएँ और ऐतिहासिक परंपराएँ आज भी अभिव्यक्त होती हैं।

चौबे सुशील कुमार – भारतीय संगीत का इतिहास

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- परांजपे शरतचन्द्र श्रीधर – संगीत बोध
- परांजपे शरतचन्द्र श्रीधर – भारतीय संगीत का इतिहास
- मिश्रा विजय शंकरः अंर्तनाद सुर और साज़
- शर्मा महारानी : संगीत मणि भाग एक ,दो
- मिश्रा विजय शंकरः अंर्तगीत सोंग्स ऑफ द सोल